# जनजातीय क्षेत्रों में आर्थिक परिवर्तन और सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण : जौनसारी जनजाति के विशेष संदर्भ में

डॉ. सन्तोष कुमार सिंह
असि० प्रोफेसर – समाजशास्त्र
नारायण कॉलेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद
नवीन कुमार
असि० प्रोफेसर – समाजशास्त्र
राजकीय स्स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहाबाद, आगरा
शोध छात्र– नारायण कॉलेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद
सम्बद्ध – डॉ० भीमराव अम्बेडकर, विश्वविद्यालय, आगरा

## सारांश

भारत विविध जनजातीय संस्कृतियों वाला देश है, जहाँ प्रत्येक जनजाति की अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना, आर्थिक व्यवस्था, परंपराएँ तथा सांस्कृतिक पहचान विद्यमान है। उत्तराखंड के जौनसार-बावर क्षेत्र में निवास करने वाली जौनसारी जनजाति भारतीय जनजातीय समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। आधुनिक विकास, शिक्षा, बाजार अर्थव्यवस्था, पर्यटन, संचार तकनीक तथा सरकारी योजनाओं के विस्तार के कारण इस जनजाति के आर्थिक जीवन में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं।

इन आर्थिक परिवर्तनों ने जीवन स्तर में सुधार तो किया है, किन्तु इसके साथ-साथ पारंपरिक संस्कृति, लोक परंपराओं, सामाजिक संस्थाओं और सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण की चुनौती भी उत्पन्न हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र में जौनसारी जनजाति के आर्थिक परिवर्तन, सामाजिक बदलाव तथा सांस्कृतिक संरक्षण की आवश्यकता का विश्लेषण किया गया है।

**मुख्य शब्द:** जनजाति, आर्थिक परिवर्तन, सांस्कृतिक पहचान, जौनसारी जनजाति, वैश्वीकरण, विकास

## 1. प्रस्तावना

भारत विश्व के उन देशों में से एक है जहाँ सांस्कृतिक, भाषाई, सामाजिक तथा भौगोलिक विविधता अत्यंत व्यापक रूप में पाई जाती है। इस विविधता का महत्वपूर्ण आधार देश की जनजातीय समुदाय व्यवस्था है, जो भारतीय सभ्यता की प्राचीन परंपराओं, प्राकृतिक जीवन शैली तथा सामुदायिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय जनजातियाँ सदियों से प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीती रही हैं तथा उनकी सामाजिक एवं आर्थिक संरचना स्थानीय संसाधनों पर आधारित रही है।

जनजातीय समाज केवल एक सामाजिक समूह नहीं बल्कि एक विशिष्ट सांस्कृतिक इकाई है, जिसकी अपनी भाषा, परंपराएँ, रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास, आर्थिक प्रणाली और सामुदायिक जीवन पद्धति होती है। भारत में निवास करने वाली विभिन्न जनजातियों ने देश की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

उत्तराखंड राज्य के जौनसार-बावर क्षेत्र में निवास करने वाली **जौनसारी जनजाति** एक महत्वपूर्ण जनजातीय समुदाय है, जिसकी पहचान अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना, सामुदायिक जीवन शैली तथा सांस्कृतिक परंपराओं के कारण स्थापित हुई है। यह जनजाति मुख्यतः पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित जीवन प्रणाली विकसित हुई। परंपरागत रूप से जौनसारी समाज कृषि, पशुपालन, वनोपज संग्रह तथा स्थानीय हस्तशिल्प गतिविधियों पर निर्भर रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार द्वारा जनजातीय क्षेत्रों के विकास हेतु अनेक योजनाएँ प्रारंभ की गईं, जिनके परिणामस्वरूप शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार तथा आर्थिक गतिविधियों का विस्तार

हुआ। सड़क संपर्क, आधुनिक शिक्षा, बाजार व्यवस्था, पर्यटन उद्योग तथा सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने जनजातीय क्षेत्रों को मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हालाँकि आर्थिक विकास और आधुनिकीकरण ने जनजातीय समाज के जीवन स्तर में सुधार किया है, परंतु इसके साथ ही पारंपरिक सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों तथा सामुदायिक पहचान पर गहरा प्रभाव भी पड़ा है। वैश्वीकरण एवं शहरीकरण के प्रभाव से पारंपरिक भाषा, लोककला, वेशभूषा तथा सांस्कृतिक परंपराओं में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी आधुनिक जीवन शैली की ओर आकर्षित हो रही है, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता के समक्ष नई चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

वर्तमान समय में विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना जनजातीय नीति निर्माण की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। यदि आर्थिक विकास स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को ध्यान में रखकर किया जाए, तो सतत एवं समावेशी विकास संभव हो सकता है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध पत्र जौनसारी जनजाति के विशेष उदाहरण के माध्यम से यह अध्ययन करने का प्रयास करता है कि आर्थिक परिवर्तन किस प्रकार जनजातीय समाज को प्रभावित कर रहे हैं तथा बदलती परिस्थितियों में सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण के लिए किन उपायों की आवश्यकता है। यह अध्ययन विकास प्रक्रिया और सांस्कृतिक अस्तित्व के मध्य संबंध को समझने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

## 2. जौनसारी जनजाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिचय

जौनसारी जनजाति उत्तराखंड राज्य की प्रमुख जनजातियों में से एक है, जो मुख्यतः देहरादून जिले के जौनसार-बावर क्षेत्र में निवास करती है। यह जनजाति अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना, पारंपरिक

जीवन शैली तथा सांस्कृतिक विरासत के कारण अन्य जनजातीय समुदायों से भिन्न पहचान रखती है। भौगोलिक रूप से पर्वतीय एवं वन क्षेत्रों में निवास करने के कारण इनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर प्राकृतिक परिस्थितियों का गहरा प्रभाव देखा जाता है।

**2.1 भौगोलिक एवं पर्यावरणीय विशेषताएँ**

जौनसार-बावर क्षेत्र हिमालयी पर्वतीय क्षेत्र का भाग है, जहाँ वन संपदा, जल स्रोत तथा कृषि योग्य भूमि सीमित मात्रा में उपलब्ध है। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों ने जौनसारी समाज को आत्मनिर्भर एवं सामुदायिक सहयोग आधारित जीवन प्रणाली विकसित करने के लिए प्रेरित किया। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की भावना इनके जीवन का अभिन्न अंग रही है।

**2.2 सामाजिक संगठन**

जौनसारी समाज पारंपरिक रूप से सामूहिकता एवं सहयोग की भावना पर आधारित है। परिवार एवं समुदाय सामाजिक जीवन की मुख्य इकाई हैं।

- संयुक्त परिवार प्रणाली का प्रचलन
- सामुदायिक निर्णय व्यवस्था
- ग्राम पंचायत एवं पारंपरिक नेतृत्व प्रणाली
- सामाजिक अनुशासन एवं रीति-नीतियाँ

समाज में सामाजिक संबंध पारस्परिक सहयोग एवं सम्मान पर आधारित होते हैं, जिससे सामाजिक एकता बनी रहती है।

### 2.3 सांस्कृतिक परंपराएँ एवं जीवन शैली

जौनसारी जनजाति की संस्कृति लोक परंपराओं से अत्यंत समृद्ध है। इनके प्रमुख सांस्कृतिक तत्व हैं—

- पारंपरिक लोकनृत्य एवं लोकगीत
- धार्मिक अनुष्ठान एवं देवी-देवता पूजा
- पारंपरिक वेशभूषा
- सामूहिक पर्व एवं उत्सव

त्योहार केवल धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि सामाजिक एकता एवं सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण का माध्यम भी होते हैं।

### 2.4 भाषा एवं लोकज्ञान

जौनसारी भाषा इस जनजाति की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार है। लोककथाएँ, पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान, कृषि तकनीक तथा पर्यावरण संरक्षण संबंधी ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होता रहा है।

## 3. जनजातीय क्षेत्रों में आर्थिक परिवर्तन

आर्थिक परिवर्तन किसी भी समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक ढाँचे को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक होता है। जौनसारी जनजाति भी आधुनिक विकास प्रक्रियाओं के कारण आर्थिक संक्रमण के दौर से गुजर रही है।

### 3.1 पारंपरिक आर्थिक व्यवस्था

पूर्व समय में जौनसारी समाज की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर प्रकृति की थी। प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ थीं—

- पारंपरिक कृषि
- पशुपालन
- वनोपज संग्रह
- हस्तशिल्प निर्माण

उत्पादन मुख्यतः घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता था तथा बाजार अर्थव्यवस्था का प्रभाव सीमित था।

### 3.2 विकास योजनाओं का प्रभाव

स्वतंत्रता के पश्चात सरकार द्वारा जनजातीय विकास कार्यक्रम लागू किए गए, जिनके परिणामस्वरूप—

- सड़क एवं परिवहन सुविधाओं का विस्तार
- शिक्षा संस्थानों की स्थापना
- स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता
- बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं का प्रसार

इन परिवर्तनों ने आर्थिक अवसरों का विस्तार किया।

### 3.3 रोजगार संरचना में परिवर्तन

आधुनिक शिक्षा एवं कौशल विकास के कारण युवाओं में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं।

- सरकारी सेवाएँ
- पर्यटन एवं होटल उद्योग
- निजी क्षेत्र रोजगार
- स्वरोजगार गतिविधियाँ

इससे पारंपरिक व्यवसायों पर निर्भरता कम हुई है।

### 3.4 बाजार एवं उपभोक्तावाद का प्रभाव

बाजार अर्थव्यवस्था से जुड़ाव के कारण उपभोग शैली में परिवर्तन आया है। आधुनिक वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग बढ़ी है, जिससे जीवन स्तर में सुधार तो हुआ है परंतु आर्थिक निर्भरता भी बढ़ी है।

## 4. आर्थिक परिवर्तन का सामाजिक प्रभाव

आर्थिक विकास का प्रभाव केवल आय वृद्धि तक सीमित नहीं रहता बल्कि सामाजिक संरचना, मूल्य प्रणाली तथा जीवन शैली में भी परिवर्तन लाता है।

### 4.1 जीवन स्तर एवं सामाजिक सुविधाओं में सुधार

आर्थिक अवसरों के विस्तार से शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास तथा संचार सुविधाओं में सुधार हुआ है। आधुनिक जीवन सुविधाओं तक पहुँच बढ़ने से सामाजिक विकास की गति तेज हुई है।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 9, Sep 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

**4.2 सामाजिक गतिशीलता एवं जागरूकता**

शिक्षा एवं बाहरी संपर्क के कारण सामाजिक सोच में परिवर्तन आया है।

- महिलाओं की शिक्षा में वृद्धि
- लैंगिक समानता की जागरूकता
- सामाजिक रूढ़ियों में कमी
- लोकतांत्रिक भागीदारी में वृद्धि

यह परिवर्तन सामाजिक आधुनिकीकरण का संकेत है।

**4.3 पारिवारिक संरचना में परिवर्तन**

आर्थिक कारणों एवं रोजगार हेतु पलायन के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली कमजोर होकर एकल परिवार व्यवस्था की ओर बढ़ रही है। इससे पारंपरिक सामाजिक नियंत्रण प्रणाली प्रभावित हुई है।

**4.4 सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव**

आधुनिक जीवन शैली, मीडिया एवं शहरी संस्कृति के प्रभाव से पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन कम होता जा रहा है। सामाजिक संबंधों में व्यक्तिवाद की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

**4.5 पलायन एवं सामाजिक परिवर्तन**

रोजगार एवं शिक्षा के लिए युवाओं का शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन बढ़ा है, जिससे ग्रामीण जनजातीय क्षेत्रों में जनसंख्या संरचना एवं सांस्कृतिक निरंतरता प्रभावित हो रही है।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 9, Sep 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

### 5. सांस्कृतिक पहचान पर आर्थिक परिवर्तन का प्रभाव

आर्थिक विकास एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने जनजातीय समाज के जीवन स्तर में सकारात्मक परिवर्तन अवश्य किए हैं, किंतु इसके साथ ही सांस्कृतिक पहचान पर गहरा प्रभाव भी पड़ा है। जौनसारी जनजाति की पारंपरिक संस्कृति, सामाजिक मान्यताएँ तथा जीवन शैली वर्तमान समय में परिवर्तन के दौर से गुजर रही हैं।

#### 5.1 पारंपरिक संस्कृति एवं लोक परंपराओं का क्षरण

पूर्व में जौनसारी समाज में लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक उत्सव एवं धार्मिक अनुष्ठान सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग थे। सामूहिक श्रम, पारंपरिक विवाह प्रणाली तथा सामुदायिक उत्सव सामाजिक एकता को मजबूत करते थे।

किन्तु आधुनिक शिक्षा, शहरी संपर्क तथा मीडिया के प्रभाव के कारण युवा पीढ़ी पारंपरिक सांस्कृतिक गतिविधियों से धीरे-धीरे दूर होती जा रही है। परिणामस्वरूप लोककला, लोकसंगीत एवं पारंपरिक अनुष्ठानों का अभ्यास सीमित होता जा रहा है।

#### 5.2 भाषा एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति पर प्रभाव

जौनसारी भाषा सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण माध्यम रही है, परंतु आधुनिक शिक्षा प्रणाली में क्षेत्रीय भाषाओं के स्थान पर हिंदी एवं अंग्रेजी के बढ़ते प्रयोग से स्थानीय भाषा का उपयोग कम हो रहा है।

भाषा के कमजोर होने से लोककथाएँ, पारंपरिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक स्मृतियाँ भी प्रभावित हो रही हैं, क्योंकि जनजातीय ज्ञान प्रणाली मुख्यतः मौखिक परंपरा पर आधारित रही है।

### 5.3 पारंपरिक वेशभूषा एवं जीवन शैली में परिवर्तन

आर्थिक विकास एवं बाजार संस्कृति के प्रभाव से पारंपरिक पहनावा, खान-पान तथा आवास शैली में परिवर्तन देखा जा रहा है। आधुनिक वस्त्र एवं उपभोक्ता संस्कृति के प्रसार ने पारंपरिक पहचान को आंशिक रूप से प्रभावित किया है।

### 5.4 सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन

पहले जौनसारी समाज सामूहिकता, सहयोग एवं सामुदायिक उत्तरदायित्व की भावना पर आधारित था। किंतु आधुनिक आर्थिक प्रतिस्पर्धा एवं व्यक्तिवादी सोच के कारण सामाजिक संबंधों में परिवर्तन आया है।

व्यक्तिगत सफलता एवं आर्थिक उन्नति को अधिक महत्व मिलने लगा है, जिससे सामुदायिक परंपराओं का प्रभाव कम हो रहा है।

### 5.5 युवा पीढ़ी एवं सांस्कृतिक दूरी

शिक्षा एवं रोजगार हेतु पलायन के कारण युवा पीढ़ी शहरी जीवन शैली से प्रभावित हो रही है। इससे पारंपरिक ज्ञान, लोककला तथा सांस्कृतिक मूल्यों का पीढ़ीगत हस्तांतरण कमजोर पड़ रहा है।

यदि यह प्रवृत्ति निरंतर बनी रही तो भविष्य में सांस्कृतिक पहचान के लुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो सकता है।

## 6. सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण की आवश्यकता एवं उपाय

जनजातीय समाज की सांस्कृतिक पहचान केवल उनकी परंपराओं का प्रतीक नहीं बल्कि उनके सामाजिक अस्तित्व, ऐतिहासिक विरासत एवं सामुदायिक आत्मसम्मान का आधार होती है। इसलिए आर्थिक विकास के साथ सांस्कृतिक संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

### 6.1 सांस्कृतिक संरक्षण का महत्व

सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण निम्न कारणों से आवश्यक है—

- सामाजिक एकता एवं सामुदायिक भावना बनाए रखने हेतु
- पारंपरिक ज्ञान प्रणाली के संरक्षण हेतु
- सांस्कृतिक विविधता बनाए रखने हेतु
- भावी पीढ़ियों को ऐतिहासिक विरासत से जोड़ने हेतु

सांस्कृतिक संरक्षण सतत विकास का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।

### 6.2 शिक्षा के माध्यम से संरक्षण

विद्यालय एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में स्थानीय इतिहास, लोकसंस्कृति एवं जनजातीय परंपराओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। इससे नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी रह सकेगी।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 9, Sep 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

**6.3 लोककला एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रोत्साहन**

सरकार एवं सामाजिक संगठनों द्वारा—

- लोकनृत्य प्रतियोगिताएँ
- सांस्कृतिक महोत्सव
- जनजातीय कला प्रदर्शनियाँ
- सांस्कृतिक प्रशिक्षण केंद्र

स्थापित किए जाने चाहिए, जिससे पारंपरिक कला जीवित रह सके।

**6.4 सांस्कृतिक पर्यटन का विकास**

जौनसार-बावर क्षेत्र में सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देकर स्थानीय संस्कृति को संरक्षित किया जा सकता है। इससे आर्थिक लाभ के साथ सांस्कृतिक पहचान भी मजबूत होगी।

**6.5 पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण**

लोक चिकित्सा, कृषि पद्धति, लोककथाएँ तथा पारंपरिक जीवन ज्ञान का लिखित एवं डिजिटल रूप में संरक्षण आवश्यक है, ताकि यह ज्ञान भविष्य में सुरक्षित रह सके।

**6.6 समुदाय आधारित संरक्षण मॉडल**

सांस्कृतिक संरक्षण तभी सफल हो सकता है जब स्थानीय समुदाय स्वयं इसमें सक्रिय भागीदारी निभाए। जनजातीय नेतृत्व एवं स्थानीय संस्थाओं को संरक्षण प्रक्रिया में शामिल करना आवश्यक है।

### 6.7 सरकारी नीतियों की भूमिका

जनजातीय विकास योजनाओं में सांस्कृतिक संरक्षण को विकास के अनिवार्य घटक के रूप में शामिल किया जाना चाहिए, जिससे आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संतुलन दोनों बनाए रखे जा सकें।

## 7. जनजातीय विकास एवं सांस्कृतिक संरक्षण में सरकारी एवं सामाजिक प्रयास

भारत सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा जनजातीय समुदायों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास हेतु अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। जौनसारी जनजाति जैसे पर्वतीय एवं दूरस्थ क्षेत्रों में निवास करने वाले समुदायों के विकास के लिए विशेष नीतियाँ बनाई गई हैं, जिनका उद्देश्य आर्थिक उन्नति के साथ सामाजिक समावेशन एवं सांस्कृतिक संरक्षण सुनिश्चित करना है।

### 7.1 जनजातीय विकास योजनाएँ

सरकार द्वारा अनुसूचित जनजातियों के समग्र विकास हेतु विभिन्न योजनाएँ लागू की गई हैं, जैसे—

- जनजातीय उपयोजना (Tribal Sub Plan)
- एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय
- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन
- स्वरोजगार एवं कौशल विकास कार्यक्रम

इन योजनाओं के माध्यम से शिक्षा, रोजगार एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया जा रहा है।

### 7.2 शिक्षा एवं मानव संसाधन विकास

शिक्षा को जनजातीय विकास का सबसे प्रभावी साधन माना गया है। जौनसार क्षेत्र में विद्यालयों, छात्रावासों तथा छात्रवृत्ति योजनाओं के माध्यम से शिक्षा के अवसर बढ़ाए गए हैं।

- जनजातीय छात्रवृत्ति योजनाएँ
- बालिका शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम
- तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण

इन प्रयासों से सामाजिक जागरूकता एवं आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है।

**7.3 आर्थिक सशक्तिकरण कार्यक्रम**

सरकार द्वारा स्थानीय संसाधनों पर आधारित रोजगार को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

- कृषि आधुनिकीकरण
- पशुपालन विकास
- हस्तशिल्प एवं लघु उद्योग
- स्वयं सहायता समूह (SHGs)

इन कार्यक्रमों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में सहायता की है।

**7.4 सांस्कृतिक संरक्षण हेतु पहल**

जनजातीय संस्कृति को संरक्षित करने हेतु विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं—

- जनजातीय सांस्कृतिक महोत्सव

- लोककला संरक्षण योजनाएँ
- संग्रहालय एवं सांस्कृतिक केंद्र
- पारंपरिक कला प्रशिक्षण

इन पहलों के माध्यम से स्थानीय संस्कृति को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल रही है।

### 7.5 गैर-सरकारी संगठनों एवं सामाजिक संस्थाओं की भूमिका

गैर-सरकारी संगठन (NGOs) जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण एवं सांस्कृतिक संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये संगठन स्थानीय समुदायों को जागरूक बनाकर विकास प्रक्रिया में सहभागी बनाते हैं।

### 7.6 स्थानीय समुदाय की सहभागिता

विकास कार्यक्रमों की सफलता स्थानीय जनजातीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर करती है। सामुदायिक नेतृत्व, ग्राम सभा एवं पारंपरिक संस्थाओं को शामिल करने से विकास अधिक प्रभावी एवं टिकाऊ बनता है।

## 8. जनजातीय विकास एवं सांस्कृतिक संरक्षण की प्रमुख चुनौतियाँ

यद्यपि जनजातीय क्षेत्रों में आर्थिक एवं सामाजिक विकास की प्रक्रिया तेज हुई है, फिर भी अनेक चुनौतियाँ आज भी विद्यमान हैं, जो सांस्कृतिक पहचान एवं सतत विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती हैं।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 9, Sep 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

### 8.1 वैश्वीकरण एवं सांस्कृतिक समरूपीकरण

वैश्वीकरण के प्रभाव से आधुनिक जीवन शैली, उपभोक्तावाद तथा बाहरी संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप स्थानीय परंपराएँ एवं सांस्कृतिक विशिष्टता धीरे-धीरे कमजोर हो रही है।

### 8.2 पलायन की समस्या

शिक्षा एवं रोजगार की खोज में युवाओं का शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन बढ़ रहा है। इससे—

- ग्रामीण जनसंख्या में कमी
- पारंपरिक व्यवसायों का पतन
- सांस्कृतिक निरंतरता में बाधा

जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

### 8.3 पारंपरिक ज्ञान का लोप

जनजातीय समाज में कृषि, औषधि एवं पर्यावरण संबंधी पारंपरिक ज्ञान मौखिक रूप से हस्तांतरित होता रहा है। आधुनिकता के प्रभाव से यह ज्ञान धीरे-धीरे समाप्त होने की स्थिति में पहुँच रहा है।

### 8.4 आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संतुलन की समस्या

तेजी से हो रहा आर्थिक विकास कई बार स्थानीय संस्कृति एवं पर्यावरण की उपेक्षा करता है। विकास परियोजनाएँ यदि स्थानीय परंपराओं के अनुरूप न हों तो सांस्कृतिक असंतुलन उत्पन्न हो सकता है।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 9, Sep 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

### 8.5 शिक्षा एवं जागरूकता की सीमाएँ

हालाँकि शिक्षा का विस्तार हुआ है, फिर भी दूरस्थ क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं सांस्कृतिक जागरूकता का अभाव बना हुआ है।

### 8.6 पर्यावरणीय चुनौतियाँ

वन संसाधनों की कमी, जलवायु परिवर्तन तथा प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन से जनजातीय आजीविका प्रभावित हो रही है, जिससे आर्थिक एवं सांस्कृतिक दोनों संकट उत्पन्न हो सकते हैं।

### 8.7 नीति क्रियान्वयन संबंधी समस्याएँ

कई बार सरकारी योजनाएँ जमीनी स्तर तक प्रभावी रूप से नहीं पहुँच पातीं। प्रशासनिक बाधाएँ, संसाधनों की कमी एवं स्थानीय आवश्यकताओं की अनदेखी विकास प्रक्रिया को सीमित कर देती हैं।

## 9. जनजातीय क्षेत्रों के सतत विकास एवं सांस्कृतिक संरक्षण हेतु सुझाव

जौनसारी जनजाति सहित भारत के अन्य जनजातीय समुदाय वर्तमान समय में आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करने की चुनौती का सामना कर रहे हैं। इसलिए विकास नीतियों को इस प्रकार तैयार किया जाना आवश्यक है कि आर्थिक प्रगति के साथ सांस्कृतिक अस्मिता सुरक्षित रह सके। निम्नलिखित सुझाव इस दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकते हैं—

### 9.1 स्थानीय संसाधनों पर आधारित विकास मॉडल

जनजातीय क्षेत्रों में विकास योजनाएँ स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों, पारंपरिक ज्ञान तथा सामाजिक संरचना को ध्यान में रखकर बनाई जानी चाहिए। बाहरी विकास मॉडल थोपने के बजाय क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप योजनाएँ लागू करना अधिक प्रभावी होगा। इससे आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ सांस्कृतिक संतुलन भी बना रहेगा।

### 9.2 सांस्कृतिक पर्यटन को प्रोत्साहन

जौनसार-बावर क्षेत्र की लोकसंस्कृति, पारंपरिक नृत्य, हस्तशिल्प एवं प्राकृतिक सौंदर्य सांस्कृतिक पर्यटन के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। यदि सांस्कृतिक पर्यटन को योजनाबद्ध रूप से विकसित किया जाए तो—

- स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त होगा
- सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण होगा
- क्षेत्रीय पहचान को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिलेगी

### 9.3 जनजातीय हस्तशिल्प एवं स्थानीय उद्योगों का विकास

पारंपरिक हस्तशिल्प, ऊनी वस्त्र, कृषि उत्पाद एवं वन आधारित उद्योगों को बाजार से जोड़ने हेतु प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता तथा विपणन सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत होगी तथा पारंपरिक कौशल संरक्षित रहेंगे।

### 9.4 शिक्षा एवं सांस्कृतिक जागरूकता कार्यक्रम

शिक्षा प्रणाली में स्थानीय इतिहास, लोकसंस्कृति एवं जनजातीय परंपराओं को शामिल किया जाना चाहिए। विद्यालय स्तर से ही विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना विकसित करने से सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहेगी।

### 9.5 युवाओं की सक्रिय भागीदारी

युवा पीढ़ी को सांस्कृतिक संरक्षण कार्यक्रमों, लोककला प्रशिक्षण एवं सामुदायिक विकास गतिविधियों से जोड़ा जाना आवश्यक है। आधुनिक तकनीक के माध्यम से युवा अपनी संस्कृति का डिजिटल संरक्षण कर सकते हैं।

### 9.6 महिला सशक्तिकरण

जनजातीय समाज में महिलाएँ संस्कृति एवं परंपराओं की प्रमुख संरक्षक होती हैं। स्वयं सहायता समूहों, कौशल विकास कार्यक्रमों एवं आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाकर सांस्कृतिक संरक्षण को मजबूत किया जा सकता है।

### 9.7 समुदाय आधारित नीति निर्माण

विकास योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन में स्थानीय समुदाय, ग्राम सभा एवं पारंपरिक नेतृत्व को शामिल किया जाना चाहिए। इससे योजनाएँ अधिक व्यवहारिक एवं प्रभावी बनेंगी।

### 9.8 डिजिटल दस्तावेजीकरण एवं अनुसंधान

लोककथाओं, लोकगीतों, पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों तथा सांस्कृतिक धरोहर का डिजिटल अभिलेखीकरण किया जाना चाहिए ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए यह ज्ञान सुरक्षित रह सके।

## 10. निष्कर्ष

जनजातीय समाज भारत की सांस्कृतिक विविधता एवं ऐतिहासिक विरासत का महत्वपूर्ण आधार है। जौनसारी जनजाति का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि आर्थिक परिवर्तन विकास की दिशा में आवश्यक एवं सकारात्मक प्रक्रिया है, जिसने शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार किया है।

किन्तु यह भी सत्य है कि तीव्र आधुनिकीकरण एवं वैश्वीकरण के प्रभाव से पारंपरिक सांस्कृतिक संरचनाएँ, सामाजिक मूल्य तथा सामुदायिक जीवन प्रणाली प्रभावित हो रही हैं। आर्थिक प्रगति के साथ उत्पन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन कई बार सांस्कृतिक पहचान के क्षरण का कारण बनते हैं।

वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि विकास प्रक्रिया को केवल आर्थिक दृष्टिकोण से न देखकर सांस्कृतिक एवं सामाजिक संदर्भों में भी समझा जाए। सतत विकास तभी संभव है जब जनजातीय समुदाय अपनी परंपराओं, भाषा, लोकज्ञान एवं सांस्कृतिक मूल्यों को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक अवसरों से जुड़ सके।

जौनसारी जनजाति के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि विकास और सांस्कृतिक संरक्षण परस्पर विरोधी नहीं बल्कि पूरक प्रक्रियाएँ हैं। आवश्यकता इस बात की है कि विकास नीतियाँ स्थानीय सहभागिता, सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा पर्यावरणीय संतुलन पर आधारित हों।

अतः जनजातीय क्षेत्रों में समावेशी एवं सहभागी विकास मॉडल अपनाकर ही आर्थिक उन्नति और सांस्कृतिक अस्मिता दोनों को सुरक्षित रखा जा सकता है। भविष्य में नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं एवं समाज के संयुक्त प्रयासों से जनजातीय समुदायों का सतत एवं संतुलित विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।

### संदर्भ सूची


1. सिंह, के. एस. (2011). *भारत की जनजातियाँ*. नई दिल्ली: मानव विज्ञान सर्वेक्षण भारत।
2. शर्मा, बी. डी. (2010). *जनजातीय विकास और प्रशासन*. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
3. दुबे, एस. सी. (2009). *भारतीय जनजातियाँ*. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
4. वर्मा, वी. पी. (2015). *भारतीय समाज और जनजातीय संरचना*. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
5. पाण्डेय, जी. (2014). *उत्तराखंड की जनजातियाँ और संस्कृति*. देहरादून: उत्तराखंड प्रकाशन।
6. जोशी, एम. सी. (2012). *हिमालयी क्षेत्र की जनजातीय संस्कृति*. नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।

7. त्रिपाठी, आर. एस. (2016). *जनजातीय समाज में सामाजिक परिवर्तन*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

8. मेहता, पी. एल. (2013). *भारत में जनजातीय अर्थव्यवस्था*. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।

9. भारत सरकार, जनजातीय कार्य मंत्रालय। (2020). *भारत में जनजातीय विकास रिपोर्ट*. नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन विभाग।

10. उत्तराखंड सरकार। (2019). *उत्तराखंड जनजातीय विकास वार्षिक रिपोर्ट*. देहरादून: जनजातीय कल्याण विभाग।

11. चौहान, आर. एस. (2017). *जनजातीय समाज और सांस्कृतिक परिवर्तन*. जयपुर: पोइंटर पब्लिशर्स।

12. मिश्रा, ए. के. (2018). *ग्रामीण एवं जनजातीय विकास*. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन इंडिया।

13. यादव, एस. पी. (2015). *भारतीय जनजातीय जीवन और परंपराएँ*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

14. भट्ट, डी. डी. (2016). *उत्तराखंड का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास*. देहरादून: विनसर पब्लिशिंग।

15. कुमार, नरेन्द्र. (2021). *वैश्वीकरण और जनजातीय समाज*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।